श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र 'आहूजी' धार 'म.प्र.'

धार नगर से 13 कि.मी. दूर पश्चिम दिशा में अतिशय क्षेत्र 'आहूजी' स्थित है। धार-अहमदाबाद मार्ग से जुड़ा होने के कारण यहाँ आगमन सुलभ है।

आहू में भी पार्श्वनाथ भगवान की चमत्कारिक प्रतिमा है, जिसके अनेकों प्रमाण जैन एवं जैनेतर लोगों की जुबान पर प्रसंगवश आते हैं। लोक व्यवहार में यह प्रसंग कहे और सुने जाते रहे हैं। किंवदन्तियों और श्रुतियों के आधार पर क्षेत्र 500 वर्ष प्राचीन माना जाता है। आहू ग्राम में विराजित यहाँ जिन प्रतिमा 350 वर्ष तक भव्य चैत्यालय में श्रावक-श्राविकाओं को भक्ति मार्ग में प्रेरित करती रही।

आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व चैत्यालय का रूपांत मन्दिर में किया गया। यहाँ लगातार धर्म प्रेमी लोगों का जमावड़ा बना रहता है। पुरातात्विक वैभव की छटा और शिल्पकला का अद्‌भुत उदाहरण आहू मन्दिर में देखने को मिलता है।

एक समय यहाँ दिगम्बर जैन समाज के अनेकों घर विद्यमान थे। श्री पार्श्वनाथ भगवान के जन्मोत्सव पर विश्व मेले का आयोजन प्रतिवर्ष होता रहता है। दूर-दूर से यात्रीगण आकर यहाँ ठहरते थे। समय चक्र के साथ-साथ जैन समाज के लोगों का शहरों की ओर आकर्षण बढ़ता गया। नवीन व्यवसायों ने उन्हें प्रवासित होने के लिये बाध्य किया। आहू ग्राम में मन्दिर जी में पूजा-प्रक्षाल के लिये कुछ घर बचे। मन्दिर जी जीर्ण-शीर्ण हो चला। परिस्थितिवश कुछ परिवारों द्वारा भगवान की पूजा-प्रक्षाल की जाने लगी। यह कुछ समय तक जारी रहा।

धार नगर के उत्साही नवयुवकों के मन में अरिहंत भक्ति का अपूर्व भाव जाग्रत हुआ। मन्दिर के जीर्णोद्धार का प्रस्ताव उन्होंने समाज के सामने रखा। तीर्थ रक्षा समिति के ध्यान में भी यह बात लाई गयी। किन्तु इस प्रस्ताव को काफी व्यय साध्य बताकर इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इसके विपरीत 'जहाँ चाह वहाँ राह' को ध्यान में रखकर युवकों ने यह भार अपने जिम्मे लिया। श्री पार्श्वनाथ भगवान की भक्ति का यह भी एक हिस्सा था। मन में संकल्प लेकर युवा हाथ जुड़ गये पुरुषार्थ में।

प्रथम चरण में मन्दिर का भित्ति निर्माण, सिंह द्वार वेदी प्रतिष्ठा की गयी। नवीन आकल्पन किया गया। वर्णित है एक प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार 21 मन्दिरों के निर्माण तुल्य है, इस संदेश से प्रेरणा लेकर कार्य किया गया। अप्रैल 66 में जीर्णोद्धार के प्रथम चरण का कार्य पूर्ण हुआ।

वर्तमान में आहू ग्राम तथा अतिशय क्षेत्र की विकास गाथा जन-जन द्वारा मुक्त कंठ से कही जाती है। अतिशय के कारण ही ग्रामोन्नति की झलक यहाँ सहज रूप में देखी जा सकती है। आवागमन के लिये पहुँच मार्ग, विद्युतीकरण संचार साधनों का विकास डाकघर, दूर संचार, हाईस्कूल यात्री बसों की सुविधा, पथ वृक्षारोपण आदि से यह क्षेत्र सुगम, सुरम्य तथा आकर्षण का केन्द्र बन गया है। दिगम्बर जैन समाज के घर यहाँ बढ़ गये हैं। जिनेन्द्र भक्ति की अविरल धारा यहाँ निरन्तर आगमन तथा दिगम्बर जैन मुनियों व मंगल विहार होने से अपूर्व आनंद का वातावरण बन गया है।

यहाँ परम पूज्य मुनि श्री नेमिसागर जी, मुनि श्री सुधर्म सागर जी, मुनि श्री निजानंद सागर जी, मुनि श्री विनय सागर जी, मुनि श्री जय सागर जी, आचार्य श्री सन्मति सागर जी ससंघ, आचार्य श्री योगेन्द्र सागर जी, आचार्य श्री भरत सागर जी, आचार्य श्री शांति सागर जी, मुनि श्री सिद्धांत सागर जी सहित अनेकानेक संतों का मंगल विहार हुआ है। संतों की अमृत वाणी का प्रभाव यहाँ के निवासियों पर पड़ने से उनके जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन हुए हैं।

जैनेतर समाज के लोग दृढ़ विश्वास के कारण मनोतियाँ मांगने हेतु यहाँ आते हैं। चमत्कारिक प्रतिमा के कारण यह मन्दिर पूरे भारत में प्रसिद्धि पा चुका है। मुनि श्री जय सागर जी एवं मुनि श्री निजानंद सागर जी महाराज इस अतिशय क्षेत्र के लिये विशेष ध्यान देते रहते हैं।

द्वितीय चरण में इस अतिशय क्षेत्र में विशाल मांगलिक भवन जिसका क्षेत्रफल 4000 वर्गफुट है, जय सागर मांगलिक भवन के नाम से निर्मित हो चुका है।

रथ-चालक

भव-जंगल में भटक रही थी, अनाथ बनकर दर-दर
संयम-रथ ले आन पधारे, दयावान सच्चे गुरुवर।
बिना किराया मुझे साथ ले, कर रहे जो शिव पथ गमन
ऐसे 'विद्या' - रथचालक को, मेरा बारंबार नमन॥
-चन्द्रकला गंगवाल, १०८ सदर बाजार मनावर